शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

तकनीक के दौर में सोशल मीडिया के कारण विद्यार्थियों की समायोजन और शैक्षणिक समस्याओं पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

अनीता मीना
शोधार्थी

प्रो (डॉ) मंजू शर्मा
शोध पर्यवेक्षक, ज्योति विद्यापीठ महिला विवि, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

प्रजातांत्रिक देश के रूप में अभिव्यक्ति की स्वंतत्रता का मौलिक अधिकार हर देशवासियों के पास है, तो इस अधिकारों के खतरे के प्रति सजग होना भी हमारा कर्तव्य है। सोशल मीडिया में अपने विचारो, मतों, अभिमतो और अपने शौक के आधार पर किसी तरह की भी अभिव्यक्ति करने की स्वंत्रतता मिली हुयी है, लेकिन इस आजादी से विद्यार्थियों को मन, मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ रहे है। इसका अध्ययन किया जाना आवश्यक है, क्योकि विद्यार्थी कल के भारत का भविष्य है। यदि विद्यार्थियों को संस्कृति, पंरपरा के अनुरूप तैयार नहीं किया गया तो भारतीय संस्कृति पर ही आने वाले समय में सवाल खड़े होने लगेगे।

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान भारत मे सोशल मीडिया के उद्‌व, विकास यात्रा के साथ ही समसामायिक पदिदृश्य के साथ ही विद्यार्थियों की अभिरूचियों का अध्ययन किया जायेगा। इसके साथ ही सोशल मीडिया के कारण विद्यार्थियों की समायोजन और सृजनात्मक क्षमता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किय जायेगा। शोध के विभिन्न चरणों की तथ्यात्मक, क्रमबद्ध, सटीक, तथ्यपरक, वैज्ञानिक, विश्वसनीय और विश्लेषणात्मक जानकारी प्रस्तुत करने के लिये शोध की वैज्ञानिक रूपरेखा तैयार की गयी है।

की वर्ड-संस्कृति, परंपरा, सोशल मीडिया, अभिव्यक्ति, मत, अभिमत, प्रजातांत्रिक देश आदि।

प्रस्तावना

हर एक शताब्दी अपनी किसी न किसी चीज के लिये या जो पहचानी जाती है, या फिर अलग पहचान निर्मित करती है। ऐसे ही 21 वीं शताब्दी इंटरनेट और वेब मीडिया के युग की शताब्दी मानी जा रही है। यह सर्वविदित है, तथा बहस का प्रमुख मुद्दा बन गया है कि बीसवी सदी की समाप्ति तक दुनिया में सशक्त मीडिया माध्यमों का तीव्र गति से विस्तार हुआ है। इस विस्तार का यह परिणाम कहा जा सकता है, कि मीडिया की शक्ति आम जनता के हाथ में आ गई है। मीडिया के बदलते आयामों को देखकर यह प्रतीत होने लगा है कि मौजूदा समय बदलाव का समय है। सूचनाओं के संप्रेषण के ऐसे नये-नये तरीके और नये-नये माध्मम सामने आए है, जो पूरी तरह हमारे जीवन का हिस्सा बन गए है। लोगों की ओर विभिन्न स्थानों को जोड़ने वाला सोशल मीडिया ऐसा ही माध्यम है, जिसे हमने जीवन के अटूट हिस्से के रूप में अपना लिया है। यह मानवीय जीवन के कई पहलुओं को न केवल तय कर रहा है, बल्कि अंतिम निर्णय की भूमिका में भी पहुंचता जा रहा है। मसलन मानवीय रहन-सहन, कामकाज, मौजमस्ती और यहां तक कि दुखी होना भी सोशल मीडिया पर निर्भर कर रहा है। इन भावनाओं का हम तुंरत जाहिर कर सकते है। ऐसे प्लेटफार्म के जरिये जिस प्लेटफार्म में आंख झपकते ही अपने संदेश दूसरों तक पहुंच जाते है। वर्तमान संदर्भ

और दौर में इसकी उपयोगिता को देखकर यह कहा जा सकता है, कि इस दौर की एक बड़ी जरूरत और हकीकत सोशल मीडिया बन चुका है।

शोध के उद्देश्य

1-सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2-शैक्षणिक समस्याओं से सामान्य ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

3-सोशल मीडिया का करने और शैक्षणिक समस्याओं के कम ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध परिकल्पना

1-सोशल मीडिया उपयोग करने वाले और शैक्षिक समस्याओं से उच्च ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव में की सार्थक अंतर नहीं है।

2- सोशल मीडिया उपयोग करने वाले और शैक्षिक समस्याओं से सामान्य ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव में की सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की सीमायें

प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच में किया गया है। अध्ययन के लिये सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 9 वीं और 10 वीं के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विवरणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

ऑकड़ों का संकलन

अध्ययन के लिये राजस्थान राज्य के द्वारा संचालित सरकारी और गैर सरकारी माध्यमित विद्यार्थयों में जयपुर जिले के केवल माध्यमिक स्तक के विद्यार्थियों को सम्मलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चयन के लिये यादृच्छक न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुये जयपुर जिले से 5 ब्लॉक से 2 सरकारी निजी विद्यालयों का चयन किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 10-15 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इस प्रकार से कुल 140 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त मापनी

शोध में दो मापनी का प्रयोग किया गया है।

1-किशोर समस्या मापनी- एम. वर्मा

2-समायोजन समस्या मापनी (A.K.P.Sinha and R.P.Singh)

इन मापनी के आधार पर संकलित किये गये ऑकड़ों का सांख्यकीय तकनीक में मध्यमान, प्रमाप विचलन और क्रांतिक अनुपात मान का प्रयोग किया गया है।

परिणाम और विश्लेषण

परिकल्पना-01-उच्च समस्या से ग्रसित विद्यार्थियों का समायोजन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक-01

समायोजन के आयाम	प्राप्तांकों का समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.-Value)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 के स्तर पर	0.01 के स्तर पर
भावात्मक समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	4.89	2.63	0.44	सार्थक अंतर नहीं है।	
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	5.02	3.12			
सामाजिक समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	4.94	2.77	1.183	सार्थक अंतर नहीं है।	
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	5.39	4.19			
शैक्षणिक समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	5.06	3.00	2.357	सार्थक अंतर है।	सार्थक अंतर नहीं है।
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	4.40	2.52			
संपूर्ण समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	14.89	5.66	1.154	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर है।
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	14.19	5.21			

df=N1+N2-2=(35+35-2=70) 0.05 Level = Table Value = 2.05 0.01 Level = Table Value = 2.61

2-शैक्षिक समस्याओं से सामान्य ग्रसित विद्यार्थियों का समायोजन पर प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक-01

समायोजन के आयाम	प्राप्तांकों का समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (C.R.-Value)	सार्थकता का स्तर	
						0.05 के स्तर पर	0.01 के स्तर पर

भावात्मक समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	4.99	2.73	2.987		सार्थक अंतर है।
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	7.71	11.90			
सामाजिक समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	4.94	2.77	3.007		सार्थक अंतर है।
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	5.39	4.19			
शैक्षणिक समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	5.06	3.00	3.604		सार्थक अंतर है। ।
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	4.40	2.52			
संपूर्ण समायोजन	सरकारी विद्यालयों के उच्च समस्याओं के ग्रसित विद्यार्थी	35	14.89	5.66	2.784		सार्थक अंतर है।
	निजी विद्यार्थियों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थी	35	13.59	13.42			

df=N1+N2-2=(35+35-2=70) 0.05 Level = Table Value = 2.05 0.01 Level = Table Value = 2.61

निष्कर्ष

परिकल्पना क्रमांक-01-शैक्षिक समस्याओं से उच्च ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का परीक्षण विभिन्न आयामों के अंतर्गत किया गया है, जिसमें शैक्षिक समस्याओं से उच्च ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन के प्रथम आयाम संवेगात्मक समायोजन, द्रितीयक आयाम सामाजिक समायोजन और संपूर्ण समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः निर्धारित की गयी शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि शैक्षिक समस्याओं से उच्च ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। दोनों समूहों के अवलोकन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि शैक्षिक समस्याओं से उच्च ग्रसित विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन में निजी विद्यार्थियों में शैक्षिक समायोजन में निजी विद्यार्थियों के विद्यार्थियों की अपेक्षा में अधिक सक्षम है।

परिकल्पना क्रमांक-02 शैक्षिक समस्याओं से सामान्य रूप से ग्रसित विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का विभिन्न आयामों मे परीक्षण किया गया है। जिसमें शैक्षिक समस्याओं से सामान्य ग्रसित विद्यार्थियों क संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक समायोजन और संपूर्ण समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। जिसके शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया है। इसके अलावा ऑकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शैक्षिक समस्याओं से सामान्य ग्रसित विद्यार्थियों में समायोजन के सभी पक्षों में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा में अधिक सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.Mathur, Rashi & Golwarkar, Shobha (2013)- A Comparative Study of Impact Education, State and Gender on Adjustment of Adolescent School Going Tribal Students in Rajasthan and Gujarat, IOSR Journal of Research &Method in Education (IOSR-JRME) Volume 2, Issue 1 (Jul. –Aug. 2013), PP 26-30

2-.Visweswari, V. and Reddy, B. Yella (2015)- A Study of Adjustment Problems of IX Class Students in Relation to Certain Factors, International Journal of Recent Scientific Research, January, 2015 Vol. 6, Issue, 1, pp.2398-2402

3-Dixit, Mohit & Singh, Varinder (2015)- Study of emotional intelligence of B.Ed. students in relation to their adjustment, International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 215-218

4-Hassan and Chakradhara Singh (2016)- A Study of Adjustment Problems of College Students in Relation To Gender, Socio-Economic Status & Academic Achievement, PARIPEX - Indian Journal Of Research, Volume : 5, Issue : 4, April 2016

5.Singh, Ratan (2016)-A Study of Secondary School Students' Adjustment in relation to their Emotional Intelligence, EPRA International Journal of Economic and Business Review, May 2016, 4(5) : 86-90